Vol 6 Issue 8 Feb 2017
ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

ISSN: 2231-5063
IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | FEBRUARY - 2017

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. ज़किया रफत
एसोसिएट प्रोफेसर , समाजशास्त्र विभाग , आर.बी.डी. महिला महाविद्यालय , बिजनौर।

सारांश–

गत कुछ वर्षों में भारत में भी महिलाओं के प्रति हिंसा में निरन्तर वृद्धि हो रही है। आज केवल महानगरों में ही नहीं छोटे शहरों, कस्बों व गांव में भी शिक्षण संस्थाओं, कार्य स्थलों, बस, टैम्पों, गली मौहल्ले आदि स्थानों पर छेड़खानी या अभद्र व्यवहार जैसी घटनाएं आम हो गयी है। इसके अतिरिक्त कन्या भ्रूण हत्या, अश्लील साहित्य और संचार साधनों में महिलाओं का गलत चित्रण, वेश्यावृत्ति, पारिवारिक उत्पीड़न और दहेज हत्याएं, बलात्कार, यौन उत्पीड़न जैसे हिंसा के विभिन्न रूप विकसित हो गये हैं।[2] वर्तमान में महिलाओं व युवतियों पर तेजाब फेंकने तथा इंटरनेट द्वारा उनकी आपत्तिजनक फोटो अपलोड करने की घटनाओं में भी तेजी से वृद्धि हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं के प्रति हिंसा के स्वरूप, कारण तथा प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना :

महिलाओं के प्रति हिंसा एक विश्वव्यापी समस्या है। संयुक्त राष्ट्र संघ के आंकड़ों के अनुसार, विश्व में 71 प्रतिशत महिलाएं शारीरिक, मानसिक तथा यौन हिंसा की शिकार होती है।1 गत कुछ वर्षों में भारत में भी महिलाओं के प्रति हिंसा में निरन्तर वृद्धि हो रही है। आज केवल महानगरों में ही नहीं छोटे शहरों, कस्बों व गांव में भी शिक्षण संस्थाओं, कार्य स्थलों, बस, टैम्पों, गली मौहल्ले आदि स्थानों पर छेड़खानी या अभद्र व्यवहार जैसी घटनाएं आम हो गयी है। इसके अतिरिक्त कन्या भ्रूण हत्या, अश्लील साहित्य और संचार साधनों में महिलाओं का गलत चित्रण, वेश्यावृत्ति, पारिवारिक उत्पीड़न और दहेज हत्याएं, बलात्कार, यौन उत्पीड़न जैसे हिंसा के विभिन्न रूप विकसित हो गये हैं।2 वर्तमान में महिलाओं व युवतियों पर तेजाब फेंकने तथा इंटरनेट द्वारा उनकी आपत्तिजनक फोटो अपलोड करने की घटनाओं में भी तेजी से वृद्धि हुई है।[3] इस तथ्य की पुष्टि दैनिक अखबारों तथा टी.वी. चैनल्स से होती है जिसमें प्रतिदिन इस प्रकार की तीन–चार खबरें प्रकाशित व प्रसारित होती हैं।

इसके अतिरिक्त देश में व्याप्त महिला हिंसा में वृद्धि की पुष्टि जून 2016 में प्रकाशित राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो की रिपोर्ट से भी होती है, जिसके अनुसार वर्ष 2015 में भारत में महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के कुल 327394 मामले दर्ज किए गए। महिलाओं के साथ सब से अधिक अपराध उत्तर प्रदेश में 35527 दर्ज हुए। इसके बाद पश्चिम बंगाल में 33218, महाराष्ट्र में 31126, राजस्थान में 28165, मध्य प्रदेश में 24135 का स्थान है। बलात्कार के कुल 34651 मामले दर्ज हुए। यानि देश में हर घण्टे बलात्कार के कहीं न कहीं 4 मामले दर्ज किये गए। इनमें सर्वाधिक मध्य प्रदेश में 4391 मामले दर्ज किये गए। इसके बाद राजस्थान में 3644 तथा उत्तर प्रदेश में 3025 मामले दर्ज किये गए। आंकड़ों से यह तथ्य भी प्रकाश में आया कि बलात्कार के कुल मामलों 34651 में से 33098 मामलों में बलात्कार पीड़िताओं के रिश्तेदारों व परिचितों द्वारा किये गए।

स्पष्ट है कि समय के साथ साथ हमारे देश में महिलाओं के विरूद्ध हिंसा की गंभीरता और बारम्बारता लगातार बढ़ती जा रही है। न महिलाएं घर के बाहर सुरक्षित है और न ही घर के भीतर। परिणामस्वरूप हर वर्ग व आयु की महिलाओं में भय व्याप्त है। उत्तर प्रदेश में बलात्कार व छेड़छाड़ की घटनाएं इतना अधिक बढ़ गयी है कि लड़कियों का स्कूल/कालिज आना जाना दूभर हो गया है। कई लड़कियों की पढ़ाई बीच में ही छूट गयी है। उक्त घटनाओं से तंग आकर, बुलन्दशहर तथा मेरठ में कालिज की छात्राओं ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर सुरक्षा प्रदान करने की गुहार लगायी है।[6] जबकि इससे निपटने के लिये 1090 पावर लाइन प्रदेश में मौजूद है। इसके अतिरिक्त भारत में महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए तीन दर्जन से अधिक कानून उपलब्ध हैं तथा राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय संगठनों में भी सिविल सोसायटी संगठन सक्रिय रूप से कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं के विरूद्ध हिंसा का मुकाबला करने के लिये कार्य करते रहे है।[7] परन्तु त्रासदी है कि हिंसा की समस्या थमने का नाम नहीं ले रही है।

महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा का प्रभाव उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व आर्थिक रूप में पड़ता है।[8] परिणामस्वरूप उनकी दैनिक क्रियाएं बाधित होती है तथा सामाजिक सामंजस्य में कठिनाई आती है एवं उनका विकास अवरूद्ध हो जाता है। देश की आधी आबादी को पीछे छोड़कर कोई भी देश आगे नहीं बढ़ सकता। अतः आज यह चिंतन का विषय है और इस पर समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किये जाने की आवश्यकता है।

उददेश्य :–
प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उददेश्य हैं–

1.महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के विभिन्न प्रकार तथा स्वरूपों को ज्ञात करना।
2.महिलाओं पर हिंसा से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3.महिलाओं के विरूद्ध होने वाली हिंसा के कारणों का पता लगाना।

अध्ययन क्षेत्र :–

प्रस्तुत अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित जनपद बिजनौर की बिजनौर तहसील में सम्पन्न किया गया है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, नगर की कुल जनसंख्या 115381 है। सर्वेक्षण कार्य नगर के मिश्रित जनसंख्या वाले क्षेत्र मौहल्ला नई बस्ती में किया गया क्योंकि यहां सभी धर्मों, जातियों व वर्गों के व्यक्ति रहते हैं।

अध्ययन विधि :–

शोध प्रचना : प्रस्तुत अध्ययन हेतु उददेश्यपूर्ण निदर्शन विधि के माध्यम से चयनित मौहल्ले से 50 महिलाओं का चयन किया गया जिनकी आयु 20 से 50 वर्ष है तथा सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है।

तथ्यों का संकलन : प्रस्तुत अध्ययन हेतु अवलोकन तथा साक्षात्कार प्रविधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

उपलब्धियां : प्रस्तुत अध्ययन की निम्न उपलब्धियां रही है–

तालिका–1
सूचनादाताओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि

आयु	धर्म	शिक्षा	परिवार	विवाहृ	कार्य की स्थिति	कार्य की प्रकृति
20 - 30 = 25 (50%)	हिन्दू 25 (50%)	उच्च शिक्षित 20 (40%)	संयुक्त 15 (30%)	विवाहित 30 (60%)	कामकाजी 25 (50%)	चिकित्सा 2 (4%)
30 - 40 = 20 (40%)	मुस्लिम 20 (40%)	अल्प शिक्षित 18 (36%)	एकाकी 35 (70%)	अविवाहित 15 (30%)	गृहणी 25 (50%)	शिक्षण 15 (30%)
40 - 50 = 5 (10%)	सिक्ख 3 (6%)	अशिक्षित 12 (24%)	–	अन्य 5 (10%)	–	स्वरोजगार 8 (16%)
–	ईसाई 2 (4%)	–	–	–	–	गृहणी 25 (50%)
योग 50 (100%)	**योग 50 (100%)**	**योग 50 (100%)**	**योग 50 (100%)**	**योग 50 (100%)**	**योग 50 (100%)**	**योग 50 (100%)**

हिंसा के प्रकार

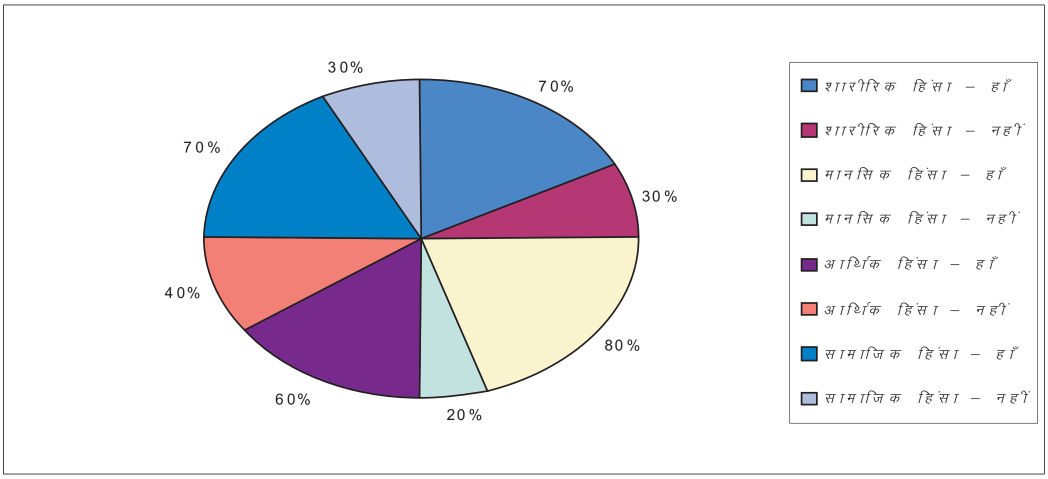

उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि 70 प्रतिशत महिलाओं के साथ शारीरिक हिंसा हुई। सर्वाधिक 30 प्रतिशत महिलाओं को मानसिक प्रकार हिंसा को सहना पड़ा जबकि 20 प्रतिशत महिलाओं के साथ किसी प्रकार मानसिक हिंसा नहीं हुई। 60 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि

उनके साथ आर्थिक हिंसा हुई है जबकि 40 प्रतिशत महिलाओं ने इसे नकारा है। 70 प्रतिशत महिलाएं सामाजिक प्रकार की हिंसा से उत्पीड़ित हुई जबकि 30 प्रतिशत के साथ ऐसा नहीं हुआ है।

हिंसा के तरीके/स्वरूप

प्रस्तुत अध्ययन में चयनित महिलाओं के साथ की गयी हिंसा में निम्न तरीके पाये गये है।

शारीरिक हिंसा के तरीके

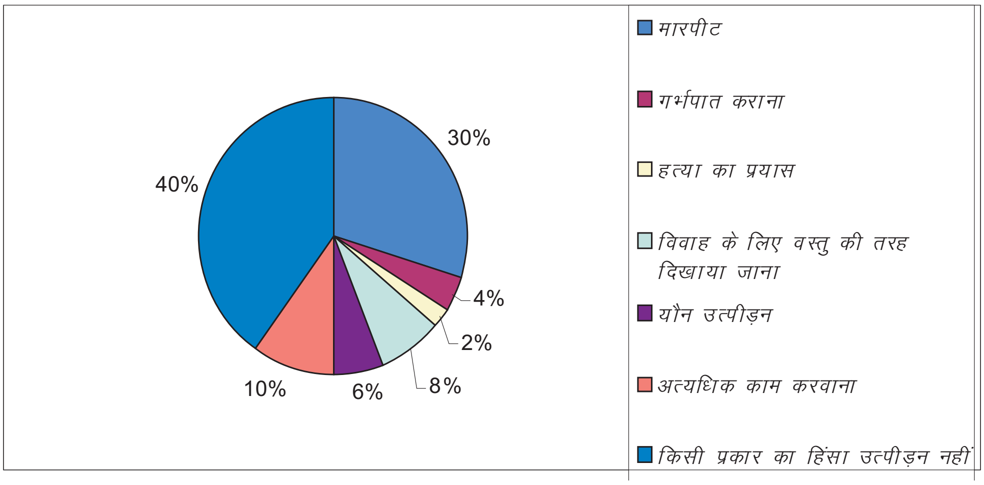

प्रस्तुत चित्र से ज्ञात होता है कि शारीरिक रूप से हिंसा का शिकार हुई 30 प्रतिशत महिलाएं मारपीट द्वारा, 4 प्रतिशत महिलांए गर्भपात द्वारा, 2 प्रतिशत महिलाएं हत्या के प्रयास द्वारा, 8 प्रतिशत महिलाएं विवाह के लिए वस्तु की तरह दिखाये जाने के द्वारा उत्पीड़ित हुई है। 6 प्रतिशत महिलाएं यौन उत्पीड़न के द्वारा, 10 प्रतिशत महिलाओं से अत्यधिक काम करवाने के रूप में हिंसा हुई है। जबकि 40 प्रतिशत महिलाओं के साथ किसी प्रकार की शारीरिक हिंसा नहीं हुई।

मानसिक हिंसा के तरीके

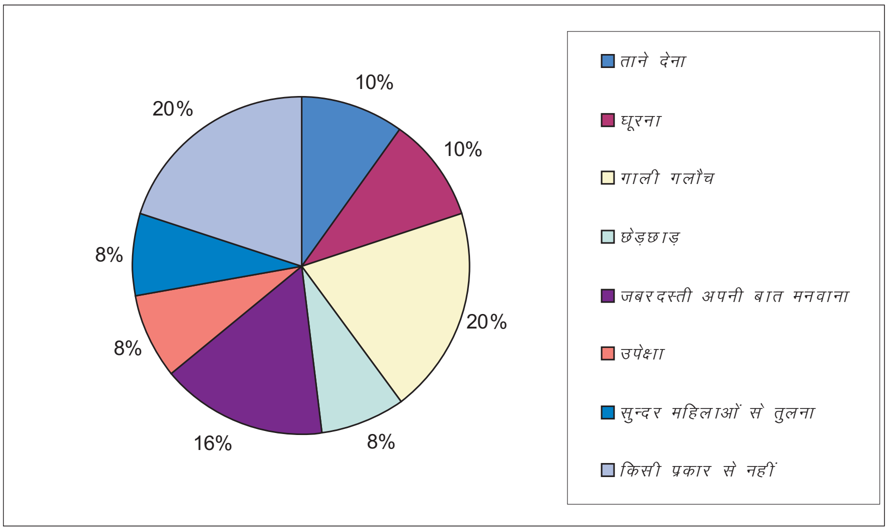

उपर्युक्त चित्र से ज्ञात होता है कि मानसिक प्रकार की हिंसा के विभिन्न तरीकों में 10 प्रतिशत महिलाएं तानों द्वारा, 10 प्रतिशत महिलाएं घूरने द्वारा, 20 प्रतिशत महिलाएं गाली गलौच द्वारा, 8 प्रतिशत छेड़छाड़ द्वारा, 16 प्रतिशत अन्य व्यक्तियों द्वारा जबरदस्ती अपनी बात मनवाने से, 8 प्रतिशत महिलाएं उपेक्षा द्वारा, 8 प्रतिशत महिलाएं सुन्दर महिलाओं से तुलना करने के द्वारा उत्पीड़ित होती है। विश्लेषण से पता चलता है कि सर्वाधिक महिलाओं के साथ गाली–गलौच के द्वारा मानसिक हिंसा होती है।

आर्थिक हिंसा के तरीके

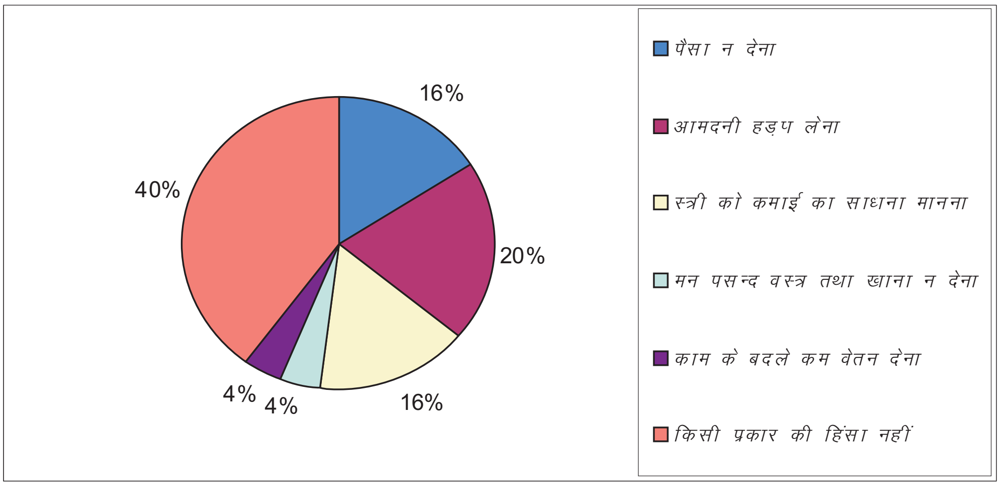

उपर्युक्त चित्र से ज्ञात होता है कि आर्थिक हिंसा के विभिन्न तरीकों में 16 प्रतिशत महिलाओं की पैसा न देने के द्वारा, 20 प्रतिशत महिलाओं को आमदनी हड़प लेने के द्वारा, 16 प्रतिशत महिलाओं को कमाई का साधन मानने द्वारा, 4 प्रतिशत महिलाओं को मनपसन्द खाना व वस्त्र न देने के द्वारा, 4 प्रतिशत महिलाओं को काम के बदले कम वेतन देने के द्वारा हिंसा हुई। जबकि 40 प्रतिशत महिलओं के साथ ऐसी किसी प्रकार की हिंसा नहीं हुई। विश्लेषण से पता चलता है कि 20 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं के साथ आमदनी हड़पने से आर्थिक हिंसा हुई।

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के कारण

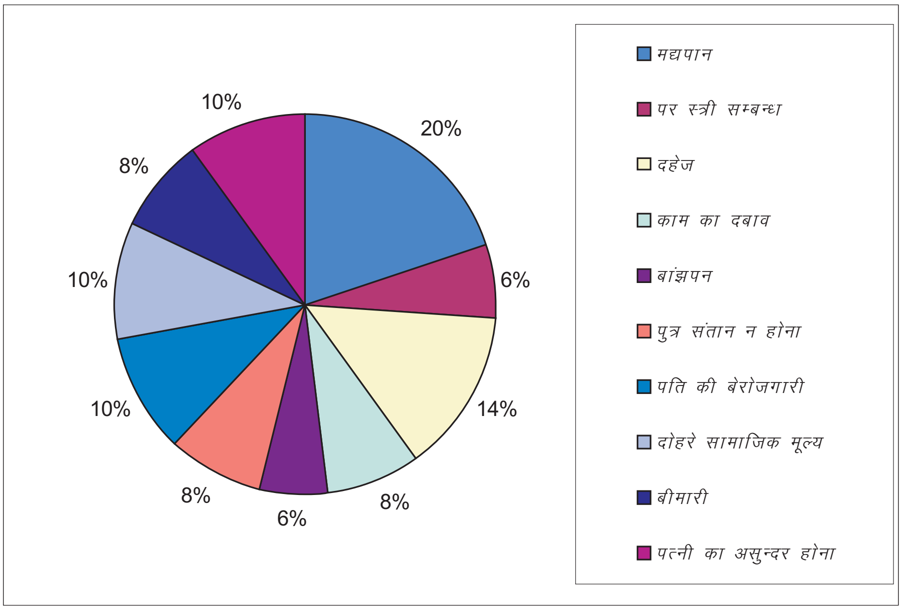

उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 20 प्रतिशत महिलाओं के विरूद्ध हिंसा का कारण मद्यपान, 3 प्रतिशत के साथ पति के पर स्त्री से सम्बन्ध, 7 प्रतिशत में दहेज, 4 प्रतिशत में काम का दबाव, 3 प्रतिशत के बांझपन, 4 प्रतिशत के पुत्र संतान न होना, 5 प्रतिशत के पति की बेरोजगारी, 5 प्रतिशत में दोहरे सामाजिक मूल्य, 4 प्रतिशत के साथ बीमारी, 5 प्रतिशत महिलाओं को असुन्दर होना है।

हिंसा के प्रभाव

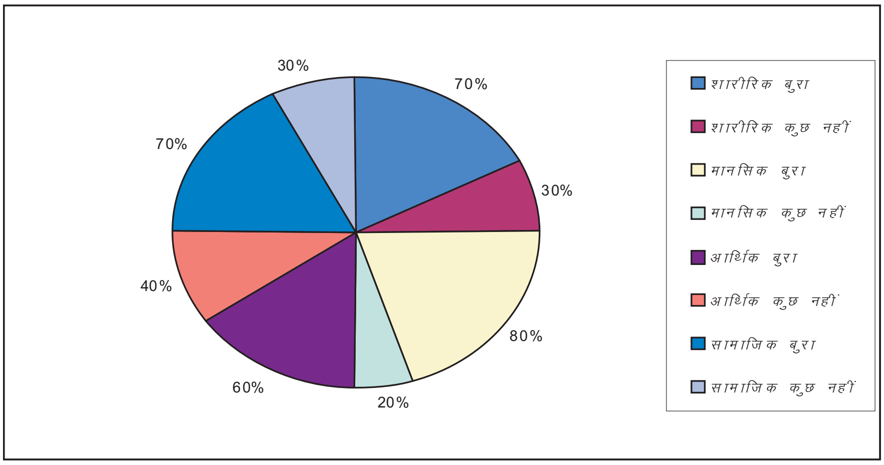

उपर्युक्त चित्र से ज्ञात होता है कि शारीरिक हिंसा का 70 प्रतिशत महिलाओं पर बुरा प्रभाव तथा 30 प्रतिशत पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा है। 80 प्रतिशत महिलाओं पर मानसिक हिंसा का प्रभाव बुरा तथा 20 प्रतिशत पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा है।

आर्थिक हिंसा का प्रभाव 60 प्रतिशत महिलाओं पर बुरा तथा 40 प्रतिशत पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा है।

सामाजिक हिंसा का 70 प्रतिशत बुरा प्रभाव तथा 30 प्रतिशत पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा है। तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सभी प्रकार के हिंसा का अधिकांश महिलाओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष :–

हिंसा चाहे शारीरिक हो, मानसिक हो, या आर्थिक, सभी रूपों में महिलाओं के लिए कष्टकारी होती है। हिंसा किसी की भी प्रगति में अवरोध उत्पन्न करती है। इसलिए हिंसा के कारण व्यक्ति सम्पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं कर पाता। महिलाओं के विरूद्ध हिंसा रोकने के लिए उन्हें शिक्षित, आत्मनिर्भर व जागरूक होना पड़ेगा। केवल कानून बनाने से ही हिंसा नहीं रूकेगी तथा कानूनों का क्रियान्वयन भी सुचारू रूप से होना चाहिये। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत प्रयास तथा पारिवारिक सहयोग भी अपेक्षित है। इसके लिए जनमत बनाना होगा। इसमें सामाजिक कार्यकर्ता, राजनेता, बुद्धिजीवी, समाजशास्त्रियों को आगे आना होगा तथा समाज में महिलाओं के प्रति सोच में परिवर्तन लाना होगा। जैसे–जैसे सोच बदलेगी हिंसा में कमी आयेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, राजेन्द्र प्रसाद, ''महिलाओं को सुरक्षा के प्रति सचेत भर रहने से काम नहीं चलेगा'' प्रभा साक्षी, prabhasakshi.com
2. लता मंजू, 2004, ''अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न'' नई दिल्ली : अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 124
3. सिंह, रूपेश कुमार (2015), भारतीय समाज में महिला उत्पीड़न एवं कानून : चुनौतियां एवं समस्याएं'', राधा कमल मुकर्जी, चिन्तन परम्परा वर्ष 17, अंक 1, जनवरी–जून, 30
4. क्राइम इन इंडिया 2015, नेशनल क्राइम ब्यूरो, रिपोर्ट।
5. त्रिपाठी, मधुसूदन (2008), 'महिला विकास एक मूल्यांकन', नई दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशंस, 121
6. ''खौफज़दा है स्कूली लड़कियां और टीचर'' जदीद मरकज़ (हिन्दी) 28 अगस्त 2016.
7. श्री, प्रियंका 2014, ''महिलाओं के विरूद्ध हिंसा : एक अध्ययन'' राधा कमल मुखर्जी : चिंतन परम्परा, वर्ष 16 अंक 1 जनवरी–जून, 87

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org